सस्य क्रियाएँ

- बिजाई के 3 और 5 सप्ताह बाद निराई व गुडाई आवश्यक है जो कि खरपतवार नियंत्रण तो करती ही है तथा नमी संरक्षण के लिए भी बहुत उचित उपाय है तथा पौधों की जड़ो तक उचित मात्रा में हवा का भी आवागमन हो जाता है।
- बिजाई के तीन सप्ताह बाद विरलन करना तथा जहां कम पौधे हैं वहां पर खाली जगह भरना। वर्षा वाले दिन यह काम अति उचित है ताकि एक एकड़ में उचित संख्या में पौधे प्राप्त हो सकें।
- फुटाव, फूल आना तथा बीज की दूधिया अवस्था में वर्षा न होने पर सिंचाई करना अत्यंत आवश्यक है तथा वर्षा आधारित क्षेत्रो में नमी सरक्षण के विभिन उपायों का प्रयोग करना बहुत जरूरी है ।
- संकर बाजरे की सिंचित फसल में नाइट्रोजन की दूसरी मात्रा लगभग 16 किलोग्राम (35 किलोग्राम यूरिया) प्रति एकड़ बिजाई के 3 हफ्ते बाद फसल की छंटाई के समय तथा 16 किलोग्राम (35 किलोग्राम यूरिया) जब गोभ में सिट्टा आ जाएं तब डालें।
- यदि बाजरे की फसल में जस्ते की कमी के लक्षण दिखाई दें तो 0.5 प्रतिशत ज़िंक सल्फेट का छिड़काव करें। एक एकड़ के लिए एक किलोग्राम ज़िंक सल्फेट (21 %), 5 किलोग्राम यूरिया व 200 लीटर पानी का प्रयोग करें।

रोग प्रबंधन

वातावरण में अधिक नमी होने पर जोगीआ रोग का संक्रमण हो सकता है जिसमे पत्तियों की निचली सतह पर सफेद फफूंद जैसा रोयोंदार आवरण (स्पोरेन्जिया) दिखाई देता है। संक्रमण के शुरुआत में ही संक्रमित पौधों को खेत से निकालकर नष्ट कर दे। यदि रोग की मात्रा सीमा स्तर (थ्रेशहोल्ड) से अधिक हो जाए तो प्रति एकड़ 500 ग्राम मैनकोजेब या जिनेब को 250 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

कीट प्रबंधन

- **फॉल आर्मीवर्म**

यह प्रमुख रूप से मक्का का सर्वाधिक हानिकारक कीट है। लेकिन इसका आक्रमण बाजरा की फसल में भी देखने को मिल रहा है। फॉल आर्मीवर्म आक्रमण की पहचान पत्तों पर लम्बे या गोल से आयताकार कटे-फटे छिद्रों द्वारा होती है तथा इसकी छोटी-बड़ी मटमैले रंग की सूण्डियां पौधों की गौभ को खाती हुई मिलती हैं ।

नियन्त्रण एवं सावधानियां

✓ फाल आर्मीवार्म की निगरानी के लिए प्रति एकड़ में 5 फेरोमोन ट्रैप लगाएं।

✓ आक्रमण दिखते ही गोभ में सूखी रेत व चूने का 9:1 मिश्रण डालें।

✓ बड़ी सुण्डियों को हाथ द्वारा एकत्र कर मार दें।

✓ साप्ताहिक अवधि पर ढ़ाई ट्राइको कार्डए जिसमें 50000 परजीवीकृत अण्डे हो, खेत में विभिन्न पौधों पर लगाएं।

- ✓ इस कीट के लिए 200 लीटर पानी में मिलाकर 5% प्रकोप तक 5% नीम बीज घोल या 1 लीटर अजाडीरेक्टिन 1500 पी.पी. एम. प्रति एकड़ की दर से छिड़कें।
- ✓ खेत में 10-20% पौधों पर या उससे अधिक आक्रमण होने पर केंद्रीय कीटनाशक बोर्ड एवम पंजीकरण समिति के द्वारा इस कीट के लिए पंजीकृत कीटनाशक जैसे क्लोरेनट्रानिलीप्रोल 47.85% एस.सी. 25-33 मि.ली. प्रति एकड़ या स्पाईनटेरोम 11.7 एस.सी. 100 मि.ली. प्रति एकड़ या फ्लूबेंडायमाइड 20% डब्ल्यूजी 100 ग्राम/एकड़ या आइसोसायक्लोसेरम 18.1% एससी 120 मिली/एकड़ या पायरीडालिल 10% ईसी 400 मिली/एकड़ या ब्रॉफ्लानिलाइड 20% ईसी 50 मिली/एकड़ में से किसी एक को 200 लीटर पानी में मिला कर गोभ में छिड़काव करें। इस कीट के नियंत्रण के लिए मक्का की फसल में उपरोक्त कीटनाशकों की सिफारिश की गई है तथा जरूरत होने पर इनका इस्तेमाल किया जा सकता है।

- **बालों वाली सूण्डियां**

इस कीट की सूण्डियां छोटी अवस्था में होती हैं तो ये इकट्ठी रहकर पत्तों की निचली सतह पर नुकसान करती हैं तथा पत्तों को छलनी कर देती हैं। ये इधर-उधर अकेली घूमती रहती हैं तथा पत्तों को खाती हैं। इनकी दो प्रजातियां हैं- बिहार हेयरी केटरपिलर व रैड हेयरी केटरपिलर। लाल बालों वाली सूण्डियां जुलाई के दूसरे पखवाड़े से अगस्त मास के अन्त तक सक्रिय रहकर नुकसान करती हैं। दूसरी प्रजाति की बालों वाली सूण्डी अगस्त से फसल की पकाई तक नुकसान करती है।

नियन्त्रण एवं सावधानियां

- ✓ लाल बालों वाली सूण्डियों के प्रौढ़ (पतंगे) रोशनी की तरफ आकर्षित होते हैं। पहली बारिश के उपरान्त एक मास तक लाइट-ट्रैप का उपयोग करें।
- ✓ खेतों के आसपास खरपतवारों को न रहने दें क्योंकि ये कीड़े उन पर अण्डे देते हैं।
- ✓ कीटों के अण्ड-समूह को नष्ट करें।
- ✓ पत्तों को छोटी सूण्डियों सहित तोड़ लें तथा ऐसे पत्तों को जमीन में गहरा दबा दें या मिट्टी के तेल के घोल में डालकर इन्हें मार दें।
- ✓ बड़ी सूण्डियों को कुचलकर नष्ट कर दें अन्यथा मिट्टी के तेल के घोल में डालकर नष्ट करें।
- ✓ बड़ी सूण्डियों की रोकथाम के लिये 250 मि.ली. मोनोक्रोटोफास (मोनोसिल/न्यूवाक्रान) 36 एस. एल. या 500 मि.ली. क्विनलफास (एकालक्स) 25 ई.सी. को 250 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ छिड़कें।

अधिक जानकारी के लिए निम्लिखित नंबरों पर संपर्क करें

9053068378 - अनुभाग अध्यक्ष **8295697470 - कीट वैज्ञानिक** **8295100390 - रोग वैज्ञानिक**

बाजरा अनुभाग, आनुवंशिकी एवं पौध प्रजनन विभाग

अनुसंधान निदेशालय,चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय , हिसार